न्यूज डायरी

चीन में भारत के खिलाफ जहर उगल अपने ही देश में घिरे नेपाली राजदूत

एजेंसी (वेब वार्ता न्यूज) काठमांडू। चीन के सरकारी भोपू ग्लोबल टाइम्स में भारत और तिब्बतियों के खिलाफ जहर उगलने वाले चीन में नेपाली राजदूत महेंद्र बहादुर पांडे खुद अपने ही देश में बुरी तरह से घिर गए हैं। नेपाली विश्लेषकों और समीक्षकों ने भारत पर आरोप लगाने की कड़ी आलोचना की है। वह भी तब चीन ने बेहद जरूरी चीजें लेकर आ रहे नेपाल के हजारों ट्रकों को लंबे समय से अपनी सीमा में रोक रखा है। नेपाली राजनयिकों ने पांडेय के बयान को अकूटनैतिक और उपहासपूर्ण करार दिया है। इससे पहले चीन की गोद में बैठे नेपाल के राजदूत महेंद्र बहादुर पांडे ने आरोप लगाया था कि भारतीय मीडिया पेइचिंग और काठमांडू को लेकर फर्जी खबरें दे रहा है। उन्होंने दावा किया कि चीन ने नहीं बल्कि भारत ने नेपाल की जमीन पर कब्ज्जा किया है। नेपाल के राजदूत का यह बयान ऐसे समय पर आया है जब खुद नेपाली मीडिया ने चीन के जमीन पर कब्जा करने का खुलासा किया था।

करोड़ों की कमाई के बाद भी ट्रंप ने 10 साल नहीं दिया इनकम टैक्स

एजेंसी (वेब वार्ता न्यूज) वॉशिंगटन। अमेरिकी मीडिया में आई एक खबर ने नवंबर में होने वाले अमेरिकी राष्ट्रपति चुनाव की बहस को नया मोड़ दे दिया है। न्यूयॉर्क टाइम्स की रिपोर्ट में दावा किया गया है कि 2016–17 में राष्ट्रपति बनने के बाद डोनाल्ड ट्रंप ने कार्यकाल के पहले साल में टैक्स के तौर पर महज 750 डॉलर (करीब 55,311 रुपये) का पेमेंट किया। खबर में यह भी दावा किया गया कि अरबपति बिजनेसमैन ट्रंप और उनकी कंपनियों ने भारत में 2017 के दौरान ही 1,45,400 अमेरिकी डॉलर (1.07 करोड़ रुपये) की रकम टैक्स के रूप में चुकाई। यही नहीं ट्रंप ने पिछले 15 वर्षों में से 10 वर्षों तक कोई टैक्स अदा ही नहीं किया। वहीं ट्रंप ने इस खुलासे को फेक न्यूज (गलत खबर) करार दिया है। असल में द न्यूयॉर्क टाइम्स की रविवार को छपी खबर के मुताबिक, ट्रंप ने जिस वर्ष राष्ट्रपति चुनाव जीता उस वर्ष 750 अमेरिकी डॉलर संघीय आयकर के तौर पर अदा किए।

'शांति से ज्यादा, तालिबान और पाक की अंतरराष्ट्रीय बलों की वापसी में रुचि'

एजेंसी (वेब वार्ता न्यूज) वाशिंगटन। पाकिस्तान के एक पूर्व राजनयिक ने कहा कि शांति समझौते से ज्यादा पाकिस्तान और तालिबान की रुचि अफगानिस्तान से अंतरराष्ट्रीय बलों की वापसी में है और साथ ही चेतावनी दी कि दोहा में चल रही मौजूदा शांति वार्ता विफलता की तरफ बढ़ रही है। अमेरिका में पाकिस्तान के पूर्व राजदूत हुसैन हक्कानी ने सोमवार को कहा," मैं बातचीत के नतीजों को लेकर बहुत आशान्वित नहीं हूं। अमेरिका ने सारी प्रमुख रियायतें सामने रख दी हैं। तालिबान जानता है कि अमेरिका अफगानिस्तान से निकलना चाहता है। वो इसे देख सकते हैं इसलिये विदेशी बलों की वापसी और उसके बाद यथास्थिति को लेकर बातचीत कर रहे है, जब वे अफगानिस्तान पर उसके इस्लामी अमीर के तौर पर शासन करेंगे।"हक्कानी ने कहा कि यह अफगानिस्तान के बाकी लोगों को मंजूर नहीं होगा।

कोरोना वायरस के बाद चीन में फैली एक और महामारी, लगाना पड़ा आपातकाल

एजेंसी (वेब वार्ता न्यूज) पेइचिंग। चीन में कोरोना वायरस के बाद अब ब्यूबोनिक प्लेग फैल गया है जिससे देश के दक्षिणी–पश्चिमी हिस्से में आपातकाल लगा दिया गया है। बताया जा रहा है कि एक तीन साल का बच्चा प्लेग की चपेट में आ गया है। यह बच्चा चीन के यून्नान प्रांत के मेंघाई काउंटी का रहने वाला है। चीन में पिछले सप्ताह प्लेग के फैलने का मामला सामने आया था लेकिन इसकी पुष्टि रविवार को हुई। डेली एक्सप्रेस की रिपोर्ट के मुताबिक प्लेग से संक्रमित बच्चे की हालत स्थिर बताई जा रही है। इस घटना के बाद चीनी प्रशासन ने इलाके में चौथे स्तर का आपातकाल घोषित कर दिया है। प्रशासन की कोशिश है कि कोरोना वायरस की तरह से एक और महामारी न फैले इसके लिए यह आपातकाल घोषित किया गया है।

आर्मीनिया से जंग के लिए तुर्की और पाकिस्तान भेज रहे हजारों आतंकवादी

ये आतंकवादी गृहयुद्ध से प्रभावित सीरिया और लीबिया से भेजे जा रहे हैं

साजिश

एजेंसी (वेब वार्ता न्यूज)

इस्लामाबाद। आतंकवाद की फैक्ट्री पाकिस्तान और उसके धार्मिक आका तुर्की के आर्मीनिया से जंग के लिए हजारों आतंकी भेजने की खबरें आ रही हैं। बताया जा रहा है कि ये आतंकवादी गृहयुद्ध से प्रभावित सीरिया और लीबिया से नागोरनो–काराबाख भेजे जा रहे हैं। किलिंग मशीन कहे जाने वाले इन आतंकवादियों को मुस्लिम देश अजरबैजान के पक्ष में ईसाई देश आर्मीनिया से युद्ध के लिए काफी पैसा दिया जा रहा है। तुर्की के इस कदम से तनाव काफी बढ़ गया है और उसके रूस से जंग का खतरा मंडराने लगा है।

ये आतंकवादी 22 सितंबर और उसके बाद तुर्की के रास्ते अजरबैजान की राजधानी बाकू पहुंचे थे। भारी हथियारों से लैस इन आतंकवादियों की तादाद करीब 1 हजार बताई जा रही है। ये सभी अल हमजा ब्रिगेड के बताए जा रहे हैं। ज्यादातर आतंकवादी सीरिया से आए हैं।

हालांकि कुछ लोगों को लीबिया से भी भेजा गया है। बताया जा रहा है कि तुर्की के इस मिशन में पाकिस्तान भी मदद कर रहा है और उसके आतंकवादी इस इलाके में काफी सक्रिय हैं।

आईएसआई आतंकवादियों को अजरबैजान भेजने का काम कर रही खबरों में दावा किया जा रहा है कि पाकिस्तानी खुफिया एजेंसी आईएसआई इन आतंकवादियों को एकजुट करके अजरबैजान भेजने का काम कर रही है। बताया जा रहा है कि तुर्की इन आतंकवादियों को 1500 से 2000 डॉलर सैलरी दे रहा है। वहीं पाकिस्तानी सोशल मीडिया में अजरबैजान के समर्थन में जमकर पोस्ट किए जा रहे हैं। बता दें कि आर्मीनिया में जहां 94 फीसदी आबादी ईसाई है, वहीं अजरबैजान में 97 फीसदी आबादी मुस्लिम है।

विश्लेषकों का कहना है कि इस जंग में अजरबैजान का साथ देकर तुर्की खुद को मुस्लिम देशों का नेता बनाना चाहता है। साथ ही उसका यह भी मकसद है कि तेल से समृद्ध अजरबैजान उसके साथ बना रहे ताकि उसे आसानी से तेल मिलता रहे। उधर, पाकिस्तान ने खुलकर अपने धार्मिक आका तुर्की और अजरबैजान का समर्थन किया है और आर्मीनिया का जोरदार विरोध किया है।

रूस और तुर्की में जंग का मंडराया खतराः इस बीच आर्मीनिया और अजरबैजान में बढ़ती जंग से रूस और तुर्की के इसमें कूदने का खतरा पैदा हो गया है। रूस जहां आर्मीनिया का समर्थन कर रहा है, वहीं अजरबैजान के साथ नाटो देश तुर्की और इजरायल है। न्यूयॉर्क टाइम्स की रिपोर्ट के मुताबिक आर्मेनिया और रूस में रक्षा संधि है और अगर अजरबैजान के ये हमले आर्मेनिया की सरजमीं पर होते हैं तो रूस को मोर्चा संभालने के लिए आना पड़ सकता है। उधर, आर्मेनिया ने कहा है कि उसकी जमीन पर भी कुछ हमले हुए हैं।

चीन से टक्कर के लिए बनेगी एशियाई नाटो की रूपरेखा

एजेंसी (वेब वार्ता न्यूज)

तोक्यो। चीनी ड्रैगन की चुनौती का सामना कर रहे दुनिया के चार बेहद शक्तिशाली देश अमेरिका, भारत, जापान और ऑस्ट्रेलिया के विदेश मंत्री 6 अक्टूबर को जापान की राजधानी तोक्यो में मिलेंगे। द क्वॉड्रिलैटरल सिक्यॉरिटी डायलॉग (फनंक) के ये सदस्य देश इंडो–पैसफिक इलाके को स्वतंत्र और मुक्त बनाए रखने की अपनी प्रतिबद्धता को दोहराएंगे। चारों देशों के नेताओं की यह मुलाकात ऐसे समय पर हो रही है जब चीन पूर्वी जापान सागर से लेकर लद्दाख तक में अपनी दादागिरी दिखा रहा है।

हिंद–प्रशांत क्षेत्र में चीन की इसी दादागिरी को रोकने के लिए जापान और भारत अपने संबंधों को मजबूत कर रहे हैं। इसी सिलसिले में जापान के नवनियुक्त प्रधानमंत्री योशिदे सुगा ने पिछले दिनों भारतीय पीएम नरेंद्र मोदी से बात की थी। इस बातचीत के दौरान पीएम मोदी और सुगा ने दोनों देशों के बीच आर्थिक और सैन्य संबंधों को और मजबूत करने पर सहमति जताई है। वहीं, पीएम सुगा ने चीन से बढ़ते खतरे को कम करने के लिए क्वॉड का सुझाव दिया था।

माना जा रहा है कि जापानी प्रधानमंत्री के सुझाव पर अब 6 अक्टूबर को चारों देशों के विदेश मंत्रियों की बैठक होने जा रही है। इसके अलावा जापानी पीएम ने संयुक्त राष्ट्र में भी आपसी सहयोग को बढ़ाने को लेकर बातचीत की है।

रूस और तुर्की में मंडराया युद्ध का खतरा

एजेंसी (वेब वार्ता न्यूज) येरेवान। काकेकस इलाके के दो देशों आर्मीनिया और अजरबैजान के बीच विवादित क्षेत्र नागोरनो–काराबाख को लेकर शुरू हुआ भीषण युद्ध दूसरे दिन भी जारी रहा। दोनों ही देशों ने एक–दूसरे पर टैंकों, तोपों और हेलिकॉप्टर से घातक हमले करने का आरोप लगाया है। बताया जा रहा है कि इस जंग में अब तक 80 से ज्यादा लोगों की मौत हो गई है और सैंकड़ों लोग घायल हैं। उधर, जैसे–जैसे यह जंग तेज होती जा रही है, वैसे–वैसे रूस और नाटो देश के तुर्की के इसमें कूदने का खतरा मंडराने लगा है।

अमेरिकी चुनाव से पहले मिसाइल हमला करवा सकते हैं डोनाल्ड ट्रंप

एजेंसी (वेब वार्ता न्यूज)

पेइचिंग। दक्षिणी चीन सागर में ताइवान के साथ चल रहे तनाव के बीच चीन को अमेरिकी मिसाइल हमले का डर सताने लगा है। चीन के सरकारी भोपू ग्लोबल टाइम्स के एडिटर हू शिजिन ने दावा किया है कि अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप अपने दोबारा चुनावी जीत के लिए साउथ चाइना सी में स्थित चीन के द्वीपों पर ड्रोन से मिसाइल हमला करवा सकते हैं। उन्होंने धमकी दी कि चीनी सेना इसका करारा जवाब देगी।

हू शिजिन ने ट्वीट करके कहा, प्राप्त सूचनाओं के आधार पर मेरा मानना है कि ट्रंप सरकार

चीन को अमेरिकी हमले का डर सताने लगा है

दोबारा चुनावी जीत के लिए साउथ चाइना सी में चीन के द्वीपों पर डफ–9 रीपर ड्रोन से मिसाइल हमला करवाने का खतरा उठा सकती है। यदि ऐसा हुआ तो चीनी सेना पीएलए निश्चित रूप से जोरदार पलटवार करेगी और जिन लोगों ने युद्ध को शुरू किया है, उन्हें करारा जवाब देगी।

अमेरिका की सेना ताइवान वापस लौटी तो चीन युद्ध छेड़ देगाः ताइवान को लेकर चीन और अमेरिका में तनाव बढ़ता ही जा रहा है। इससे पहले ग्लोबल टाइम्स ने ही धमकी दी थी कि अगर अमेरिका की सेना ताइवान वापस लौटी तो चीन युद्ध छेड़ देगा। ग्लोबल टाइम्स के एडिटर हू शिजिन ने अमेरिका और ताइवान को धमकाते हुए कहा कि चीन अलगाव रोधी कानून एक ऐसा टाइगर है जिसके दांत भी हैं। दरअसल, ग्लोबल टाइम्स के एडिटर एक अमेरिकी जर्नल में ताइवान में अमेरिकी सेना के भेजने के सुझाव पर भड़के हुए थे।

हू शिजिन ने ट्वीट करके लिखा, मैं अमेरिका और ताइवान में इस तरह की सोच रखने वाले लोगों को निश्चित रूप से चेतावनी देना चाहता हूं। एक बार अगर वे ताइवान में अमेरिकी सेना के वापस लौटने का फैसला करते हैं तो चीनी सेना निश्चित रूप से अपने क्षेत्रीय अखंडता की रक्षा के लिए एक न्याय युद्ध शुरू कर देगी।

अमेरिका में अस्पताल श्रृंखला पर साइबर हमला

एजेंसी (वेब वार्ता न्यूज) वाशिंगटन। अमेरिका में सोमवार को एक प्रमुख अस्पताल श्रृंखला के सभी अस्पतालों की कम्प्यूटर प्रणालियां ठप्प पड़ गई, जिसे कम्पनी ने प्रौद्योगिकी से जुड़ी ''सुरक्षा समस्या'' करार दी। इस दौरान सभी डॉक्टरों और नर्सों को ऑनलाइन की जगह हर काम के लिए कागजों का इस्तेमाल करना पड़ा। 'यूनिवर्सल हेल्थ सर्विसेज इंक' के अमेरिका में 250 से अधिक अस्पताल और अन्य स्वास्थ्य केन्द्र हैं। उसने अपनी वेबसाइट पर सोमवार को एक संक्षिप्त बयान में कहा कि उसका नेटवर्क ऑफलाइन है और डॉक्टर तथा नर्स कागज सहित अन्य स्रोतों का इस्तेमाल कर काम कर रहे हैं। वहीं 'फॉर्चून 500' कम्पनी ने कहा कि मरीजों का इलाज जारी है। किसी मरीज की जानकारी को कॉपी किए जाने या उसका गलत इस्तेमाल किए जाने का कोई संकेत नहीं है। कम्पनी में करीब 90 हजार कर्मचारी हैं। इस बीच, 'अमेरिकन हॉस्पिटल एसोसिएशन' के वरिष्ठ साइबर सुरक्षा सलाहकार जॉन रिग्गी ने इसे ''संदिग्ध रैनसमवेयर हमला'' बताया। उन्होंने बताया कि कोरोना वायरस के दौरान अपराधी स्वास्थ्य देखभाल संस्थानों के नेटवर्क को तेजी से निशाना बना रहे हैं।